पलायन गांव से गांव को...

सौर ऊर्जा... कैसे किसी गांव की सूरत बदल सकती है, इसका एक जीता-जागता उदाहरण मध्यप्रदेश में मौजूद है। हालांकि, यह बात थोड़ा उदास करती है कि, सकारात्मक ऊर्जा से भर देने वाला यह गांव बिना किसी सरकारी प्रयासों के हर समय रोशन रहने वाला गांव बन गया है। एक प्राइवेट कंपनी के इनीशिएटिव पर किसी वन ग्राम में बड़े परिवर्तन किए जा सकता हैं, तो हम सरकारी प्रयासों के साथ प्रदेश की स्थिति बदलने की कल्पना तो कर ही सकते हैं। पिछले दिनों मेरी एक विजिट ने मुझे इस बात का अहसास दिलाया कि मध्यप्रदेश में त्रासदी की तरह देखी जाने वाली सूखे की स्थिति और पलायन को भी सौर ऊर्जा के दम पर मात दी जा सकती है।

पलायन की त्रासदी मध्यप्रदेश के लिए कोई नई बात नहीं है... गांव में सूखा झेल रहे किसानों को शहर जाने का ख्वाब दिखाई देता है और शहर में रोज मरकर जीता गरीब गांव को ही स्वर्ग मानता है। यह बिलकुल उसी तरह है कि दूसरे की थाली का लड्डू हमेशा ही सबको बड़ा दिखता है। मध्यप्रदेश का बुंदेलखंड रीजन विशेष रूप से सूखा प्रभावित ऐसा क्षेत्र है, जहां हर साल सूखा हजारों परिवारों को गांव छोड़ शहर की गाड़ी पकड़ने के लिए मजबूर कर देता है। अगर, हम इस बात का पता लगाने निकलें कि आखिर शहर जाने वाले लोगों की ऐसी कौन सी जरूरतें हैं, जो गांव में पूरी नहीं हो पातीं। तो पता चलेगा कि फसल सूख जाने के कारण गरीबी, भुखमरी, और तंगहाली ही वे अहम वजहें हैं, जो इन्हें गांव छोड़ने पर विवश कर देती हैं।

एक ओर बुंदेलखंड के ये गांव जहां न फसल है इंसानों के लिए, न ही ऐसा चारा जिससे कम से कम जानवर ही अपना पेट भर सकें। वहीं, दूसरी ओर मध्यप्रदेश का ही एक गांव जो घने जंगल के बीच बसा है, इस पलायन की परिस्थिति का सकारात्मक दृश्य हमारे सामने रखता है। यहां मात्र एक दिन की विजिट ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि आखिर सिर्फ बिजली का होना किसी गांव में इतना बदलाव कैसे ला सकता है। कैसे सालों से सूखे के कारण हो रहे पालयन के बिलकुल उलट सिर्फ बिजली के कारण पलायन का रुख गांव से नहीं बल्कि गांव की ओर हो गया। गुना जिले के मीरवाड़ा गांव में विस्थापन का जो चेहरा मुझे नजर आया, वह घुप्प अंधेरे में मेरे लिए एक रोशनी की किरण के समान था। आप सोच रहे होंगे कि भला ऐसा विस्थापन का कौन सा पहलू है, जो इंसान को दुखी न करता हो। दरअसल, यहां पिछले दो सालों में दस परिवार बढ़ गए हैं, वो भी आस-पास के गांवों से विस्थापित होकर। मध्यप्रदेश में यह घटना पहली मर्तबा है, जो किसी गांव ने दूसरी जगहों से लोगों को अपनी ओर बस जाने के लिए आकर्षित किया। वह भी जब आकर्षित करने वाला गांव मेन सड़क से सात किलोमीटर दूर अंदर घने जंगल के बीचो-बीच बसा हो। आप सोच रहे होंगे विस्थापन! वो भी गांव से गांव के बीच... भला वो क्यों? और कैसे? आखिर ऐसा क्या है, इस गांव में जो दूसरों में नहीं। दूसरे गांवों से परिवारों का विस्थापित होकर इस गांव में आकर बसने की एकमात्र वजह है यहां की बिजली। इस गांव में बिजली का मतलब केवल तार के खम्भे, 2 दिनों केवल 2 घंटे की बिजली नहीं, बल्कि और भी बहुत कुछ है। राजस्थान के बॉर्डर से लगा हुआ यह वन ग्राम... ऐसी जगह बसा है, जहां आसानी से पहुंचना मुश्किल है। जहां हर साल बारिश के मौसम में दो से चार बार बाढ़ आना तय है, ऐसे गांव में विस्थापित होकर हमेशा के बस जाने का निर्णय आखिर किस आधार पर लिया गया? यह एक बड़ा प्रश्न था।

लोगों के बातकर सामने आया कि बिजली के कारण मन मुताबिक, समयानुसार काम करने की आजादी, बिजली से चलने वाले पानी के पम्प के कारण राजस्थान के बॉर्डर पर होते हुए भी फसल का लहलहाना और हर तरह के आधुनिक उपकरण हैं, इस गांव में लोगों को खींच लाने का कारण। यहां रात में अंधेरा नहीं होता, बल्कि लोग अपने-अपने घरों में बैठकर टीवी देखते हैं। मोबाइल पर बात करते हैं। अब तो इन घरों में दिए की पीली और कम रोशनी नहीं बल्कि तेज सफेद दूधिया रोशनी मिलती है। यही वजह है कि इस गांव में जब से लाइट आई तब से लेकर अब करीब 2 सालों में यहां 10 परिवार अपने गांव छोड़कर यहां आकर बस गए हैं। ईंट के टेंपरेरी मकान बना लिए। जिस सोलर इलेक्ट्रिसिटी कंपनी ने इस गांव पर काम किया है, यहां तक कि उसने नए घरों को बिजली देने से मना कर दिया, तो भी गांव वालों ने मुखिया की इजाजत लेकर ही जैसे-तैसे घर बना लिए। और... अब तो हालात यह हैं कि, इन नए बने घरों में सौर ऊर्जा से बनी बिजली जगमगा रही है। हालांकि, कंपनी की ओर से इन्हें फ्री कनेक्शन अभी नहीं दिया गया, लेकिन पड़ोसियों के घर से इन्होंने भी अपने घर को रोशन कर लिया।